Central Asia : Literary

Cultural Scenario and Hindi

मध्य एशिया : साहित्यिक,

सांस्कृतिक परिदृश्य और हिन्दी

Editors

Manish Kumar Mishra

Alisher Ikramov

Sherdor Pultov

Parveen Kumar

Anang Prakashan

Delhi (Bh[illegible])

CS CamScanner

सर्वाधिकार सुरक्षित
लेखक व प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस पुस्तक का कोई भी अंश, किसी भी रूप में या किसी भी प्रकार से इलेक्ट्रॉनिक, मशीनी या फ़ोटोकॉपी या रिकॉर्डिंग द्वारा प्रतिलिपित या प्रेषित नहीं किया जा सकता।

आईएसबीएन : 978-81-990891-
प्रकाशक : **अनंग प्रकाशन**
पता : बी-107/1, गली मंदिर वाली, समीप रबड़ फैक्ट्री, उत्तरीघोण्डा, दिल्ली-110053 (भारत)
दूरभाष: 9350563707, 9540176542
ई-मेल: anangprakashan@gmail.com
शाखा : भगतपुर, पोस्ट-भगतपुर, जिला-अलीगढ़ उ.प्र. (भारत) पिन 203132
संस्करण : प्रथम संस्करण, 2025
आवरण सज्जा : तुषार चौहान
सर्वाधिकार : सुरक्षित
मुद्रक : बाबा भभूति प्रिंटर्स, दिल्ली (भारत)

By: **Rs. 1495/-**

Dedicated to

Mr. Sitesh Kumar

(Former Cultural Director, Lal Bahadur Shastri Indian Cultural Centre, Tashkent, Uzbekistan)

With gratitude for his affection and support.

CamScanner

मध्य एशियाई कविताओं का हिंदी भाषा से संबंध
डॉ. चित्रा मिलिंद गोस्वामी 330
मध्य एशिया में भारतीय संस्कृति और बौद्ध धर्म का प्रभाव
उषा दुबे 338
भारतीय संगीत, नृत्य और परंपराओं का मध्य एशियाई संस्कृति पर प्रभाव
डॉ. कल्पना 346
राष्ट्रवाद में भाषा का सहयोग
डॉ. दीपक त्रिपाठी 350
हिन्दी भारत की राजभाषा से विश्वभाषा
डॉ. नवल पाल प्रभाकर दिनकर (साहित्यकार) 358
अबाय कुनानबायेव : कज़ाखिस्तान के महान कवि और विचारक
डॉ. मनीष कुमार मिश्रा 369
मध्य एशिया: साहित्यिक, सांस्कृतिक परिदृश्य और हिन्दी भाषा
डॉ. विजय पाटिल (वरिष्ठ शिक्षक) 378
मध्य एशियाई साहित्य पर भारतीय भाषाओं का प्रभाव
पवन कुमार 383
भारत-मध्य एशिया संबंधों में हिंदी भाषा की भूमिका
प्रीति उपाध्याय 389
हिन्दी साहित्य में मध्य एशिया का चित्रण: सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य
बिरेन्द्र कुमार शर्मा 396
भारत-मध्य एशिया के साझा साहित्यिक तत्व भारतीय सूफ़ी साहित्य के विशेष संदर्भ में
मंजना कुमारी 403
"पवलाई" का उज़्बेकिस्तान में स्वागत...
मुर्तजाखोदजायेवा एम.एम. 410
भारतीय संगीत विधाओं-परम्पराओं का मध्य एशियाई संस्कृति पर प्रभाव
मोनिका भट्ट 419
उज़्बेकिस्तान में भारत के इतिहास का अध्ययन और अध्यापन
रखमतजोनोवा कामोला अब्दुमुताल क़िज़ी 425
सोवियत संघ के विघटन के बाद मध्य एशियाई देशों में हिंदी भाषा का प्रभाव
शिवांगी गुप्ता 428
भारतीय संगीत, नृत्य और परंपराओं का मध्य एशियाई संस्कृति पर प्रभाव
संतोष देवराम गावंडे 434
बाबरी मुगलकालीन शासन में भाषाई संस्कृति पर एक अध्ययन
सालिमलेकोव नोदिरबेक 442
मध्य एशियाई साहित्य पर भारतीय भाषाओं का प्रभाव
सुप्रिया शशिकांत माने 446
डॉ. मनीष मिश्रा की कविताओं में उज़्बेकिस्तान की संस्कृति एवं सभ्यता का अवलोकन
डॉ. रीना सिंह 452

CamScanner

"पवलाई" का उज़्बेकिस्तान में स्वागत...

मुर्तजाखोदजायेवा एम.एम्.

उज़्बेकिस्तान में भारतीय विद्या का इतिहास 78 साल का है। तमिल भाषा और साहित्य इस क्षेत्र में एक नई दिशा बनी। तमिल साहित्य पर भी आजकल वैज्ञानिक अनुसंधान किया जा रहा है। आधुनिक तमिल साहित्यकार चिन्नप्प भारती का उपन्यास 'पवलाई' उज़्बेकिस्तान में प्रवेश करने वाला पहला तमिल उपन्यास बना।[1]

आधुनिक तमिल साहित्य के प्रमुख प्रतिनिधि, सुब्रमण्यम भारती द्वारा स्थापित यथार्थवाद स्कूल के प्रतिनिधि चिन्नप्प भारती (1935–2022) ने अपने रचनात्मक जीवन की शुरुआत कविता और पत्रकारिता लेख लिखने से की, लेकिन उनके साहित्यिक योगदान का सर्वोच्च शिखर उनके उपन्यास माने जाते हैं। उनके 'शक्कर', 'कोयले की खान', 'प्यास', 'दलित संघ' और 'पवलाई' जैसे उपन्यास कई भाषाओं में अनुवादित किए गए हैं।

चिन्नप्प भारती तमिल साहित्य के सबसे प्रमुख लेखकों में से एक हैं। लेकिन आधुनिक तमिल साहित्य में उपन्यास विधा के अंतर्गत जो महान योगदान उन्होंने दिया है, वह अनमोल है। उनके सफल रचनात्मक जीवन का रहस्य, सबसे पहले, उनकी मेहनत और समर्पण में छिपा है। किसी भी रचना को लिखने से पहले वह जिन लोगों के बारे में लिखने जा रहे होते, उनकी जीवनशैली और रीति-रिवाजों से क़रीबी से परिचित होते। वह अपने पात्रों के साथ जीते थे, उनके साथ अपने अनुभव साझा करते और

1. "विश्व साहित्य" पत्रिका, ताशकंद, 2015 वर्ष, अंक 1-2। उपन्यास मक्तूबा मुर्तजाखोदजायेवा द्वारा अनुवादित किया गया। अनुवाद की सफलता में अपने अनुभव और ज्ञान के द्वारा सहायता प्रदान करने के लिये स्वर्गीय हरिबाला बालासुब्रमण्यम तथा कुशल अनुवादक स्वर्गीय आमिर फैज़ुल्ला को अनुवादिका अपनी आभारी प्राकत करती है।

स्थानीय लोगों की जीवन परिस्थितियों को गहराई से समझते थे। उन्होंने कभी भी ऐसे जीवन के बारे में बढ़ा-चढ़ाकर नहीं लिखा, जिसे उन्होंने खुद न जिया हो और न देखा हो। उनके अनुसार[2], कोई भी चीज़ बिना आधार के उत्पन्न नहीं होती – सब कुछ अनुभव से आता है। चिन्नप्प भारती के अनुसार, उन्होंने "पवलाई" उपन्यास लिखते समय लेव तोल्स्तोय के "अन्ना कारेनिना" उपन्यास से प्रेरणा ली थी। चिन्नप्प भारती ने एक बार मेरे सामने अपने डेस्क पर रखे लेव तालस्तोय की प्रतिमा की ओर इशारा करते हुए कहा था: "यही है मेरा प्रेरणास्रोत।"

मुझे गर्व के साथ इसको कहने में खुशी हो रही है कि युवा साहित्यकारों के लिए स्थापित "चिन्नप्प भारती" नामक पुरस्कार मुझे भी "पवलाई" उपन्यास के अनुवाद के लिए प्रदान किया गया था।

चिन्नप्प भारती की रचनाएँ अपने विविध विषय-वस्तु, उजागर किए गए सामाजिक मुद्दों और समस्याओं, तथा इन पर उनकी तीव्र लेखनी के कारण अन्य रचनाकारों से स्पष्ट रूप से अलग नज़र आती हैं। लेखक अपने पात्रों को जीवन से खोजते हैं। यहाँ एक सवाल पैदा होता है: क्या उपन्यास लिखने के लिए पात्रों के साथ जीना ज़रूरी है? सही बात है– यह ज़रूरी नहीं है। बाहरी निरीक्षण से भी लेखन किया जा सकता है। लेकिन जीवन रूपी हांडी में पका हुआ, उसका कड़वा-मीठा स्वाद चखकर महसूस किए गए अनुभवों को साहित्यिक चित्रण के ज़रिए 'उपन्यास' जैसे दस्तरख़ान पर परोसना एक अलग बात है। ऐसी रचनाएँ पाठकों को भी गहराई से प्रभावित करती हैं। जब वे उपन्यास के पात्रों के बीच अपने आपको या अपने किसी परिचित व्यक्ति की झलक देखते हैं, तो वे सोच में पड़ जाते हैं– "अरे, क्या यह मैं हूं?" या "यह तो फलाँ व्यक्ति जैसा लग रहा है।" पाठक इन रचनाओं के माध्यम से समस्याओं के समाधान तलाशते हैं, और कुछ को तो अपने सवालों के जवाब भी मिल जाते हैं।

चिन्नप्प भारती की रचनाओं में "पवलाई" उपन्यास विशेष रूप से अलग है। इस रचना में लेखक मजदूरों के जीवन से निकलकर प्रेम की दुनिया की ओर यात्रा करता है। लेकिन यह कोई साधारण प्रेम कहानी नहीं है। उन्होंने सामंती युग के प्रेम की तस्वीर पेश करने की कोशिश की है, क्योंकि उस दौर में महिलाओं के पास कोई अधिकार नहीं थे। उपन्यास की नायिका पवलाई अपने प्रेमी से विवाह नहीं कर पाती। वह किसी और से शादी करती है, लेकिन सुखी नहीं रह पाती। जब उसे अपने पूर्व प्रेमी की बीमारी के बारे

2. सन् 2011 में चिन्नप्प भारती के नमक्कल स्थित घर में मेहमान रही थी और मुझे उनसे क़रीबी से बातचीत करने का सुअवसर मिला था।

CamScanner

में पता चलता है, तो वह अपने पति को छोड़ देती है। उनके जीवन में तंकम्मा नाम की एक निम्न जाति की स्त्री के प्रवेश से उपन्यास में दो वर्गों – उच्च और निम्न तबके के बीच मौजूद टकराव और सामाजिक अंतर्विरोधों को उजागर किया गया है।

"पवलाई" उपन्यास लेखक की अन्य कृतियों से अपनी रोचक कथा-वस्तु और उच्च साहित्यिकता के कारण अलग नजर आता है। उपन्यास का मुख्य विषय अपनी प्रेम-यात्रा में पारंपरिक नहीं, बल्कि अनोखा संघर्ष का रास्ता अपनाने वाली एक तमिल महिला के जीवन को दर्शाना है। लेखक आज के भारतीय समाज में भी प्रचलित कुछ पिछड़े रिवाजों और सोच की तीव्र आलोचना करते हुए यह संदेश देते हैं कि महिलाओं की भी अपनी आवाज होती है और लड़कियों की शादी में उनके विचारों और इच्छाओं को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए। उपन्यास की शुरुआत एक रेट्रोस्पेक्टिव (पुनरावलोकनात्मक) शैली में होती है, यानी रचना का मुख्य पात्र पेरियण्णन अपने अतीत की यादों को ताज़ा करता है। उपन्यास में समाज की महिलाओं के अधिकारों को सीमित करने वाले नियम-कायदे, माता-पिता की इच्छाओं के खिलाफ न जा पाने जैसी समस्याओं के कारण पवलाई अपने प्रेम को त्यागने पर मजबूर हो जाती है और पास के गांव में रहने वाले पेरियण्णन से विवाह कर लेती है। दरअसल, पवलाई जिससे प्रेम करती थी वह एक गरीब युवक था, जिसका कोई नहीं था। इसी वजह से उसके माता-पिता अपनी बेटी की शादी उससे नहीं करना चाहते थे और संपत्ति के मालिक पेरियण्णन को दामाद के रूप में चुनते हैं।

घटनाओं की प्रगति के साथ, पवलाई एक ऐसे ग्रामीण परिवेश की सरल लड़की के रूप में चित्रित होती है जो निष्कलंक प्रेम की स्वामिनी, आज्ञाकारी पत्नी, मेहनती मां और अपने प्रेम के लिए संघर्ष करने वाली साहसी महिला है। लेकिन समय के साथ जब वह दस वर्षों के शांत और सुसंस्कृत वैवाहिक जीवन को त्यागकर, पक्षाघातग्रस्त होकर अकेले रह जाने वाले अपने पूर्व प्रेमी की सेवा में स्वयं को समर्पित कर देती है – तो वह भारतीय समाज में अभूतपूर्व, कल्पनातीत घटना बन जाती है।

स्वाभिमानी व्यक्ति पेरियण्णन भी, पारिवारिक सम्मान की रक्षा के लिए, पवलाई के अपने गाँव और अपने पूर्व प्रेमी के पास लौट जाने की बात को समाज और अपने ससुराल पक्ष से छुपा लेता है।

विवाह के दिन, जब पवलाई ज़मीन पर अपने पैरों को जमाए खड़ी होती है, तो उसकी और उसकी माँ के बीच एक तीखी बातचीत होती है। इसी बीच जब उसकी माँ छोटी बेटी के सुखी भविष्य का हवाला देती है, तो वर्षों से पवलाई के हृदय में दबे हुए

विरोध और आक्रोश लावा बनकर फूट पड़ते हैं। और वह कह उठती है:

– क्या माँ का दिल भी बच्चों में भेद करके स्नेह बाँटता है? मेरे जीवन को रौंदकर क्या उस पर बहन का विवाह होगा? मेरे जीवन का अंत और उसके भविष्य की शुरुआत की बात कैसे सोचती? [3]

यह विद्रोह पवलाई का पीछा जीवनभर नहीं छोड़ता। लेखक उस पीड़ा को, जो एक स्त्री के हृदय को छलनी करती है और समय-समय पर फिर से जाग उठती है, अत्यंत कौशल और रूपकों के माध्यम से भावपूर्ण ढंग से चित्रित करते हैं।

जीवन-सागर में डूबकर, अपने भाग्य को स्वीकार कर चुकी पवलाई अपने जीवनसाथी के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खेतों में मेहनत करती है, घर-गृहस्थी के कामों को निःशब्द रूप से अंजाम देती है और कभी भी इस निरंतर श्रम की शिकायत नहीं करती। समय के साथ पवलाई एक पुत्र को जन्म देती है, किंतु पूरे उपन्यास में इस संतान के विषय में विशेष विवरण नहीं मिलता।

कथा की चरम परिणति उस क्षण में प्रकट होती है जब पवलाई अपने पति को' अपने पूर्व प्रेमी के विषय में बताती है और उनके संबंध की सच्चाई को उजागर करती है।

.... मैंने तुम्हें हमेशा के लिए छोड़ने का निश्चय कर लिया है। तुम्हारे साथ जिंदगी गुजारकर तंग आ गई ऐसी बात नहीं है। तुम्हारे जैसा पति तो किसी को तपस्या करने पर भी नहीं मिलेगा। अल्हड़पन में, अबोध अवस्था में, अनजाने ही मुझसे अपराध हो गया। बार-बार वही पाप करके, उसी की याद में तड़पकर मैंने पति को धोखा नहीं दिया, तुम्हारे साथ मैंने कोई बुरा बर्ताव नहीं किया। मैं तो मायके भी नहीं जाना चाहती थी। एक कहावत है, चीटियों के लगातार चलते-चलते पत्थर भी घिस जाता है। उसी तरह गाँव जाने पर कहीं फिर से भेंट हो गई तो मन चंचल होगा, तुम्हारे साथ विश्वासघात होगा-ऐसा सोच-सोचकर डर रही थी लेकिन विधि को कुछ और ही मंज़ूर था। मेरी याद में घुल-घुलकर उसने शादी नहीं की। उसके माँ-बाप, संगी-साथी कोई नहीं है। एकाएक लकवे का शिकार होकर, सुन्न हाथ-पाँवों के साथ उसने खाट पकड़ ली है। हमसे जब

---

3. चिन्नप्प भारती. पवलाई. नई दिल्ली, 2001, पृ.18

4. पेरियन्नन इस सच्चाई से बहुत पहले ही वाक़िफ़ था, लेकिन उसने न तो कभी इसका ज़िक्र किया और न ही पवलाई से कोई सवाल किया – सिर्फ इसलिए कि वह अपने परिवार की प्रतिष्ठा की रक्षा करना चाहता था और क्योंकि वह पवलाई से सच्चा प्रेम करता था।

CamScanner

गलती हुई-सगी मामा का लड़का ही तो है ऐसा सोचकर उसी से मेरा विवाह कर देते तो ठीक था। लेकिन वैसा नहीं हुआ। अब बेचारा अनाथ पड़ा है। मेरी याद में अपनी जिंदगी बर्बाद कर ली। उसके अंत समय तक उसकी देखभाल करके उसकी मिट्टी श्मशान तक पहुँचानी होगी। उधर माँ काम करेगी इसी बहाने मैंने भी उसकी रक्षा करने का निश्चय कर लिया। हमेशा के लिए तुमसे अलग होने के सिवाय दूसरा कोई रास्ता नहीं है...। [5]

पवलाई के हृदय में पहली प्रेम की विजयी अनुभूति, अंततः उसे अपने वर्तमान वैवाहिक सुख पर स्वयं ही मिट्टी डालने के लिए विवश कर देती है।

उपन्यास की घटनाओं में दस से अधिक पात्र शामिल हैं। इनमें से कुछ पात्र घटनाओं में प्रत्यक्ष भाग लेते हैं और उनके स्पष्ट नाम भी दिए गए हैं, जबकि अन्य पात्र कथानक में अप्रत्यक्ष रूप से – या तो पात्रों के संवादों अथवा लेखक की वाणी के माध्यम से – उपस्थित होते हैं। कुछ पात्रों के नाम नहीं बताए गए हैं, जैसे पवलाई का प्रेमी, उसका बेटा, माता-पिता, पेरियण्णन के दादा-दादी और चाचा की पत्नी। कथानक में उनकी भूमिका के आधार पर पात्रों को प्रमुख (प्रथम श्रेणी) और गौण (द्वितीय श्रेणी) पात्रों में विभाजित किया जा सकता है।

पेरियण्णन एक दृढ़ संकल्पी, सहनशील, परिश्रमी युवक है, जिसने अनाथ होकर जीवन की कठोरताओं को बचपन से ही झेला है। मां का स्नेह न पाने के कारण वह अपने वैवाहिक जीवन के प्रारंभिक दिनों से ही पवलाई से गहरा लगाव रखने लगता है। शायद यही कारण है कि जब उसे पवलाई के पूर्व प्रेम संबंधों का पता चलता है या जब वह देखता है कि उसकी पत्नी उसे छोड़कर चली गई है – तब भी वह इस विषय पर किसी से कुछ नहीं कहता।

यदि जीवन की परिस्थितियाँ उसे विवश न करतीं, यदि वह गंभीर रूप से बीमार न पड़ता – तो शायद वह तंकम्मा के साथ जीवन बिताने को भी तैयार न होता, क्योंकि वह जानता था कि उसकी प्रिय पवलाई अब कभी लौटकर नहीं आएगी, फिर भी किसी और स्त्री के साथ संबंध बनाना उसके स्वभाव के विरुद्ध था।

इस प्रकार, लेखक पेरियण्णन के चरित्र को अत्यंत विनम्र, मौन सहनशीलता के साथ भाग्य की लहरों में बहते एक सजग और संवेदनशील व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करता है।

उपन्यास की एक और पीड़ित नायिका है – तंकम्मा। वह एक विधवा है,

5. चन्निप्प भारती.पवलाई. नई दल्लिी, 2001, पृ.76

निःसंतान, अनपढ़, समाज के सबसे निचले तबके से ताल्लुक रखने वाली स्त्री, जिसका इस व्यवस्था में कोई अधिकार, कोई स्थान नहीं है। इसके बावजूद, वह गंभीर, जीवन के संघर्षों को भोग चुकी, दूरदर्शी महिला के रूप में सामने आती है। भारतीय समाज में विधवाओं को तुच्छ दृष्टि से देखा जाता है; आमतौर पर उन्हें जीवन की रंगीन परछाइयों से काटकर एक कोने में डाल दिया जाता है – और तंकम्मा भी उन्हीं में से एक है।

जब पवलाई घर छोड़कर चली जाती है, तब पेरियण्णन के बेरंग, नीरस जीवन में तंकम्मा पहले एक सेविका के रूप में प्रवेश करती है। धीरे-धीरे वह उसकी सहानुभूति प्राप्त करती है, जीवन-संघर्ष में उसकी सहभागी बनती है – और समाज की कठोर निंदा के बावजूद, वह बिना विवाह किए उसकी संगिनी बन जाती है। वर्षों से संजोया गया मातृत्व का सपना एक दिन साकार होता है – वह गर्भवती हो जाती है। लेकिन एक दृढ़ निश्चयी महिला के रूप में, वह अपने बच्चे के दुर्भाग्यपूर्ण भविष्य और उसकी प्रतिष्ठा की रक्षा हेतु न केवल अपने जीवन, बल्कि अपनी संतान के जीवन पर भी पर्दा डाल देती है।

भारतीय साहित्य में प्रायः देखा जाता है कि अंततः नेकी बदी पर विजय प्राप्त करती है और सच्चाई की जीत होती है। लेकिन "पवलाई" उपन्यास इस परंपरा से एक महत्वपूर्ण अपवाद है। उपन्यास के अंत में तंकम्मा मृत्यु को प्राप्त होती है और पवलाई का भविष्य भी अनिश्चितता के अंधकार में डूबा रह जाता है।

यही अस्पष्टता पाठक को गहरे चिंतन और आत्ममंथन के लिए विवश करती है। अंधपरंपरा का अंधानुकरण, स्त्री की विवशता, उसे अधिकारहीन बनाकर जीने के लिए मजबूर करने वाली सामाजिक व्यवस्था और जातिगत एवं वर्गगत असमानता – ये सभी विषय उपन्यास में कुछेक पात्रों के आत्मिक संघर्षों के माध्यम से अत्यंत प्रभावशाली ढंग से उजागर किए गए हैं।

उपन्यास को पढ़ते समय पाठक के मन में यह स्वाभाविक प्रश्न उठ सकता है – "इस रचना का नाम पवलाई क्यों रखा गया है, जबकि उपन्यास में पेरियण्णन के जीवन को अधिक विस्तार से चित्रित किया गया है?"

लेकिन जैसे-जैसे पाठक कथा की गहराई में उतरता है, यह स्पष्ट हो जाता है कि लेखक ने पवलाई के आंतरिक द्वंद्वों, उसके भावनात्मक संघर्षों और उसकी मानसिक यात्रा को अत्यंत सूक्ष्मता और प्रभावशाली ढंग से उजागर किया है। पवलाई का बचपन, उसका प्रथम प्रेम, विवाह और पारिवारिक जिम्मेदारियों के प्रति उसकी निष्ठा और अंत में उसके विवेक के विरुद्ध सिर उठाने वाली भावनाओं की शक्ति – इन सभी को लेखक

CamScanner

ने मार्मिकता के साथ प्रस्तुत किया है।

वह एक ऐसी स्त्री बन सकती थी, जो अपने प्रेम का गला घोंटकर, शेष जीवन को अपने परिवार के प्रति समर्पित कर देती। मगर उसने ऐसा नहीं किया। पवलाई ने अपने भीतर की स्वतंत्र इच्छाओं को मुखर होने दिया और एक ऐसा रास्ता चुना जिसकी कोई अपेक्षा नहीं कर रहा था।

लेखक इस निर्णय के माध्यम से यह कहना चाहता है कि स्त्री भी एक पूर्ण मनुष्य है और जैसे पुरुष को खुश रहने का अधिकार है, वैसे ही स्त्री भी अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेने और अपने लिए सम्मानजनक जीवन जीने की अधिकारी है। समाज द्वारा उस पर थोपी गई "कमज़ोर" की छवि वास्तविकता से बहुत दूर है – अगर वह चाहे तो हर सामाजिक रुकावट को पार कर सकती है और उसका समाज में भी एक ठोस स्थान है।

हालाँकि, यह निष्कर्ष निकालना कि "लेखक कहना चाहता है कि स्त्री को हर हाल में अपने दिल की सुनकर ही फैसला करना चाहिए", एक सरलीकृत और सतही व्याख्या होगी।

पवलाई ने ऐसा निर्णय भावनात्मक आवेग में नहीं लिया, बल्कि जीवन के तराजू के एक पलड़े पर उसने उस व्यक्ति को रखा जिसे उसने कभी दिल से चाहा था और जो आज घोर बीमारी से ग्रस्त होकर अकेलेपन की यातना झेल रहा है और दूसरे पलड़े पर उस जीवनसाथी को, जिसने उसे कभी दोष नहीं दिया और उसे एक सम्मानजनक पारिवारिक जीवन दिया।

यह चुनाव उसकी इंसानियत, उसका अंतर्द्वंद्व, उसकी चेतना और उसकी आत्मा की पुकार का परिणाम था – और यही "पवलाई" उपन्यास की आत्मा है।

पेरियण्णन एक उदार हृदय, दयालु और क्षमाशील व्यक्ति है, जो लोगों को जाति या वर्ग में बाँटकर नहीं देखता, बल्कि सभी को समान दृष्टि से देखता है। जब उसे अपनी पत्नी के अतीत के पाप का पता चलता है और यहाँ तक कि जब वह अपनी पत्नी को छोड़कर चली जाती है, तब भी वह पवलाई को क्षमा कर देता है।

उसकी ज़िंदगी में दूसरी स्त्री, तंकम्मा, के प्रति भी वह समाज की रूढ़िवादिता और प्रथाओं के खिलाफ जाकर उसकी रक्षा करने का प्रयास करता है। संक्षेप में, पेरियण्णन एक ऐसा व्यक्ति है जो हर हालात में स्त्री की रक्षा करने की कोशिश करता है।

तमिल समाज में स्त्री की स्थिति को तंकम्मा के चरित्र के माध्यम से भी उजागर किया गया है। लेखक ने तंकम्मा के ज़रिए भारतीय समाज में निचली जाति से आने वाली

विधवा स्त्री के प्रति नकारात्मक रवैये पर अपनी आलोचना व्यक्त की है।

भारतीय समाज में विधवा स्त्री की स्थिति अत्यंत नीची मानी जाती है। यदि वह विधवा रह जाती है, तो माना जाता है कि उसका पुनः विवाह नहीं हो सकता। लेखक इस दृष्टिकोण की कड़ी आलोचना करता है और सवाल उठाता है कि स्त्री को वस्तु की तरह देखकर यह रवैया कब तक चलेगा? क्या किसी इंसान के भाग्य, सम्मान और भावनाओं का कोई मूल्य नहीं?

लेखक पाठक को लगातार उस रूढ़िवादी सोच को सुधारने का आह्वान करता है जो स्त्रियों के अधिकारों का उल्लंघन करती है। इसके साथ ही वह उपन्यास में दोनों स्त्रियों के भाग्य की व्याख्या पेरियण्णन के पात्र के माध्यम से करता है, जो एक उदार हृदय वाला ऐसा पुरुष है जो स्त्री की गरिमा को समझता है।

फिर भी, केवल पेरियण्णन के लिए क्या संभव था? क्या वह अकेला पूरे समाज के खिलाफ खड़ा हो सकता था?...

"पवलाई" उपन्यास में लेखक ने बौद्धिक और कलात्मक शैली के माध्यम से – जैसे कि उपमाएँ और रूपकों – का प्रभावी उपयोग किया है। उदाहरण के तौर पर, जब पेरियण्णन अपनी पत्नी के साथ शादी समारोह के लिए जा रहा होता है, तब उसकी एक ग्रामीण बुज़ुर्ग से हुई बातचीत को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है:

1. ...*क्यों ताऊ... आठ-दस बकरियाँ थीं न... अब तो चार-पाँच ही दीख रही हैं...।"*

अपनी लाल-लाल आँखों को बार-बार मटकाकर फटाक् से बोले-"अरे भाई, तेरे जैसे पुत्र को जन्म देता तो इस उम्र में बकरियाँ चराने की नौबत न आती। पापी पेट की आग बुझाने के लिए कुछ बकरियाँ बेचकर खा गया। बैल बूढ़े होने पर कसाईखाने में जाएगा और इंसान बूढ़ा होने पर दर-दर की ठोकरें खायेगा। [6]

2. ...*प्रिम फेंक दी जानेवाली जूठी पत्तल है?...* [7]

3. ...कहते हैं, सच्चाई चप्पल पहनकर निकलने से पहले झूठ संसार का एक चक्कर लगा लेता है। ज़रा-सी सच्चाई मुँह से निकलते ही वह लोगों के मुँह से गुब्बारा बनकर फूट पड़ेगा। [8]

6 चिन्नप्प भारती.पवलाई. नई दिल्ली, 2001, पृ.69

7 वही, पृ.58

8 वही, पृ.66

CamScanner

संक्षेप में कहा जाए तो, चिन्नप्प भारती की "पवलाई" उपन्यास भारतीय समाज में स्त्रियों के भाग्य, विधवा स्त्रियों के प्रति दृष्टिकोण और स्त्री हृदय की गहरी शक्ति को पवलाई और तंकम्मा के चरित्रों के माध्यम से एक असामान्य और प्रभावशाली तरीके से उजागर करता है। लेखक इस उपन्यास में यह कोशिश करता है कि समाज में स्त्रियों की स्थिति क्या होनी चाहिए और स्त्री के अंदर छुपे भावनात्मक संघर्षों की शक्ति क्या-क्या हो सकती है, इन सवालों का अपना विशिष्ट समाधान प्रस्तुत करे।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि तमिल उपन्यासों को उज़्बेक पाठक भी अन्य भारतीय उपन्यासों की तरह बहुत पसंद करते हैं। चिन्नप्प भारती के उपन्यासों के पात्र किसी भी समाज में प्रासंगिक हैं। पवलाई, तंकम्मा, पेरियण्णन जैसे सादे, दुःखी, मेहनती लोग उज़्बेक समाज में भी मौजूद हैं – बस उनके नाम अलग हैं।

संदर्भ-ग्रंथ

1. "Jahon adaboyoti", Toshkent, 2015 yil, №1-2 ("World Literature", Tashkent, 2015, №1-2)

2. Chinnappa Bharathi's novels. A critical study. Chennay, 1996 Madras

3. Бычихина Л. В., Дубянский А.М.. «Тамильская литература». Москва, ١٩٨٧г. (Bychixina L. V., Dubyanskiy A.M.. "Tamil literature". Moscow, ١٩٨٧)

4. Проблемы индийского романа. Москва, ١٩٧٤ г. (Problems of Indian novels. Moscow, ١٩٧٤)

5. चिन्नप्प भारती.पवलाई. नई दिल्ली, 2001

6. सन्देश.चिन्नप्प भारती.वर्ग के जुझारू साहित्यकार. नयी दिल्ली. अप्रैल, 2009

मुर्तजाखोजायेवा एम.एस.,

वरिष्ठ शिक्षक, ताशकंद स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ ओरिएंटल स्टडीज,

ताशकंद, उज़्बेकिस्तान said_lola@mail.ru, +998935774070

भारतीय संगीत विधाओं-परम्पराओं का मध्य एशियाई संस्कृति पर प्रभाव

मोनिका भट्ट

भूमिका : भारत की संस्कृति, परम्पराएँ और संगीत वैदिक काल से अपनी विशिष्टता बनाये हुए हैं। भारतीय इतिहास इन्हीं परम्पराओं से समृद्ध है। वैदिक काल में जन्मी ये परम्पराएँ एवं संगीत विधाएँ– गायन, नृत्य एवं वादन भारतीय संस्कृति की वैभवशाली विरासत हैं, जो सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध हैं। इन अद्वितीय परम्पराओं का इतिहास 5000 वर्षों से भी पूर्व का है। इनमें धर्म और संस्कृति का परस्पर समन्वय दिखाई देता है। जो कि समाज में आपसी एकता, नैतिक मूल्यों और सौहार्द की भावना को बढ़ावा देती है। प्रत्येक परंपरा को किसी ना किसी पुराने विचार एवं रीति रिवाज़ों से जुड़ा हुआ माना जा सकता है।

ये परम्पराएँ एवं संगीत वर्तमान समय में भी दर्शनीय है, परन्तु आधुनिकीकरण के कारण इनमें कुछ विविधताएँ देखने को मिलती हैं। जिसके परिणामस्वरूप इनमें भी परिवर्तन आये। आज भारतीय संगीत सरहद पार देशों में भी अपनी मनमोहक धुनों, लय, ताल, बोल आदि के कारण प्रचलित है। चाहे भारतीय सिनेमा हो या यहाँ के गीत सभी ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी अलग पहचान बनायी है। भारत प्राचीन काल से विविधताओं वाला देश रहा है। चाहे वह अलग-अलग प्रान्त हो या भाषाएँ यहाँ हर एक क्षेत्र में विविध रूप दर्शनीय हैं। हर क्षेत्र विशेष की अलग सांस्कृतिक परम्पराएँ हैं, जो अनेकता में एकता का प्रतिक हैं एवं आपस में हर धर्म को जोड़े रखती हैं। जिसके संदर्भ में यह एक कहावत प्रचलित है– 'कोस-कोस पर पानी बदले, चार कोस पर वाणी'। यही विविधताएँ भारतीय संस्कृति को अन्य देशों की संस्कृति से भिन्न बनती है। मुख्य रूप से संवाद के लिए राष्ट्र भाषा हिंदी, अंग्रेजी आदि का उपयोग किया जाता है।[1] (Indian culture)

CS CamScanner